एक परिचय

2 तीमुथियुस

2 तीमुथियुस के इस अध्ययन का दृश्य सुसमाचार में अपने पुत्र के लिए एक बूढ़े सिपाही की भावनाओं से बनता है। यह दृश्य कुछ – कुछ मेरी जवानी के उस प्रभावशाली क्षण से मेल खाता है, जब मैंने एक बूढ़े सिपाही को अपने सैनिक पेशे के मंच से नीचे पांव रखते देखा और सुना था।

अप्रैल 19, 1951 को अमेरिकी कांग्रेस को सज़्बोधित करते हुए जनरल डगलस मैकार्थर के अन्तिम शज़्द थे:

> सदी के पलटने से भी पहले की बात है, जब सेना में भर्ती होकर, मेरे बचपन की आशाएं व स्वप्न पूरे हो गए थे। वैस्ट प्वायंट में शपथ लेने के दिन से आज तक कई बार दुनिया बदल गई है, वे सभी आशाएं व स्वप्न अब नहीं रहे, पर आज भी मुझे उस ज़माने के सैन्यावास के प्रसिद्ध गीत का मुखड़ा याद है, जिसमें बड़े गर्व से कहा गया था कि पुराने सिपाही कभी मरते नहीं; वे केवल लोप होते हैं। और, उस गीत के पुराने सिपाहियों की तरह, मैं पुराना सिपाही जिसने अपनी पूरी लगन से फर्ज को निभाया जिसे परमेश्वर ने उस कर्ज़व्य को समझने में मुझे रोशनी दी थी, अपना सैनिक पेशा छोड़कर लोप हो जाता हूं। अलविदा।[1]

सुसमाचार में पौलुस द्वारा अपने पुत्र तीमुथियुस को लिखी पत्री में ये बातें लागू करना कितना उपयुज़्त है (1:2; 2 तीमुथियुस 1:2)। पौलुस को इस बात का पता था या नहीं कि तीमुथियुस को यह उसका अन्तिम विदाई सज़्बोधन है, हम भी नहीं जानते, लेकिन मसीह में वह बूढ़ा सिपाही सचमुच कभी नहीं मरा, वह तो केवल लोप हुआ है!

बेशक हम पौलुस के पास बैठकर उससे उसकी मिशनरी यात्राओं या रोम में उसके अंतिम दिनों के बारे में और विस्तार से नहीं सुन सकते, पर वह सदियों से जीवित है। उसने हमारे मनों को उत्साहित किया है, हमारे मनों को दीन किया है, और परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों और अपने प्रभावशाली व्यज़्तित्व से मसीही सेवा के लिए हमारी इच्छाओं को जागृत किया है!

जनरल मैकार्थर के विदाई संदेश को देखते हुए, मुझे एक बूढ़े सिपाही की विदाई का अहसास करते हुए अपना गला भर आने और भरे हुए गले और आंखों से आंसू निकलना नहीं भूला है। उस पत्री को पूरी तरह से तर करने वाली भावना की समझ से 2

तीमुथियुस पढ़ने पर मूल दस्तावेज़ों पर पौलुस और तीमुथियुस के आंसुओं की कल्पना की जा सकती है।

इस पत्री में पौलुस के मन, उसकी आशा, उसकी स्मरण शक्ति, और उसके संदेश से मन कांप सकता है।

पौलुस का हृदय

कैद में मरने के निकट मसीह के एक बूढ़े सिपाही के हाथ से लिखी कुछ बातों पर मनन करें:

> पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है। प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। ...
>
> ... तेरे आंसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूं कि आनन्द से भर जाऊं। और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, ... इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है चमका दे (1:1-6)।
>
> इसलिए ... मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो ... (1:8)।
>
> तू जानता है, कि आसिया वाले सब मुझ से फिर गए हैं, ... (1:15)।
>
> इसलिए हे मेरे पुत्र, ... मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाईं मेरे साथ दुख उठा (2:1-3)।
>
> ... अपनी सेवा को पूरा कर। ज़्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है (4:5, 6)।
>
> मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर (4:9)।
>
> मेरे पहिले प्रत्युज़र करने के समय किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, बरन सब ने मुझे छोड़ दिया था ... (4:16)।
>
> जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न कर ... (4:21)।

पौलुस का मन अवश्य कांप गया होगा और उसकी आंखों से आंसू टपक रहे होंगे। बीस शताज्दियों बाद भी प्रज्वलित मन अपने अन्दर पौलुस की उस तड़प को महसूस करते हैं जिसे तीमुथियुस के जाड़े से पहले वहां पहुंचने की आशा है!

यह बेहद व्यज़्तिगत पत्री है! (अंग्रेज़ी बाइबल में) एक बार पौलुस ने अपने नाम का

इस्तेमाल किया (1:1) और 28 बार ''मैं'' कहा। पत्री में ''मुझे'' शब्द छब्बीस बार और ''मेरा'' ग्यारह बार, कुल मिलाकर चार अध्यायों (83 आयतों) में अपने लिए छियासठ हवालों का इस्तेमाल किया।

यह *तीमुथियुस* के नाम बेहद व्यक्तिगत पत्र भी है, जिसमें एक बार उसका नाम लिया गया (1:2) और उसे ''प्रिय पुत्र'' (1:2) और ''मेरे पुत्र'' (2:1) कहा गया। पौलुस ने तीमुथियुस को सम्बोधित करने के लिए पच्चीस बार ''तुझे, तू'' और दो बार ''अपने आप'' और पांच बार ''तुम्हारा'' शब्द का इस्तेमाल किया है। लगभग तीस बार ''तुम'' शब्द का अर्थ समझ आता है। पौलुस ने चार अध्यायों में तीमुथियुस के नाम पत्री में किसी न किसी प्रकार छह बार ''हम,'' ग्यारह बार ''हम या हमारा'' इस्तेमाल किया है!

बेशक शब्दों का गिनना बहुत ही थका देने वाला और तकनीकी काम है, परन्तु इससे मसीह में अपने ''प्रिय पुत्र'' के साथ बड़ी निकटता से बात करने का पता चलता है।

पौलुस की आशा

पौलुस की निजी निष्ठा और दिलचस्पी पूरी पत्री में ''कैदी'' (1:8), ''कैद'' (2:9), और ''ज़जीरों'' (1:16) जैसे मुख्य शब्दों में है। उसकी परिस्थितियों से यह उसके कष्ट का समय लगता है (1:12; 2:9, 12; 3:11, 12; 4:5)। यह लज्जित होने का नहीं (1:8, 12, 16; 2:15) बल्कि ''सहने'' का समय था, क्योंकि प्रभु ने उसे इसमें से छुड़ाना था (3:11; 4:17, 18)। यह मसीही लोगों का एक-दूसरे के यत्न से मिलना था (1:17; 4:9, 21)। इस जोड़ को निम्न रूपरेखा में मुख्य शब्दों से दिखाया गया है: परीक्षाओं में तीमुथियुस की *स्थिरता* के लिए (अध्याय 1), तीमुथियुस के लिए *अच्छा सिपाही* बनने (अध्याय 2), *अपनी रक्षा करने* (अध्याय 3) और पौलुस की तरह *अपनी दौड़ पूरी करने* के लिए पौलुस की आज्ञा (अध्याय 4) पर ध्यान देने की पौलुस की बिनती।

पौलुस की यादें

कुछ अर्थों में पौलुस का एक पांव अतीत में और दूसरा भविष्य की ओर था। वह अपने आप को एक बूढ़े सिपाही के रूप में देख रहा था। वह जीवन के लाभ की एक स्थिति से दूसरी में प्रवेश कर रहा था जो कि पहले वाले से अधिक महिमा से भरा था।

पौलुस ने अपने बाप दादों (1:3), तीमुथियुस की माता और नानी (1:5; 3:14, 15), ''परमेश्वर का वरदान'' देने के लिए तीमुथियुस पर हाथ रखने (1:6), उसे दुखी करने वालों (1:15; 2:17, 18; 4:10, 14-16) और उसे तसल्ली देने और उसका साथ देने वालों (1:16-18; 4:11, 17, 18) को याद किया (और चाहा कि तीमुथियुस भी उन्हें याद रखे)। पौलुस ने पूर्वानुमान लगाते हुए भविष्य की ओर भी देखा। उसने ''जीवन और अमरता'' (1:10), प्रभु द्वारा ''अपने स्वर्गीय राज्य में'' उसका उद्धार करके मसीह में उद्धार (2:10) और धर्म का मुकुट प्राप्त करने (4:8) का पूर्वानुमान लगाया।

पौलुस का संदेश

इस पूरी पत्री में एक सुनहरी धागा पिरोया गया है जिसे पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस नज़रअन्दाज़ न करे ज़्योंकि वह धागा उसके जीवन में परमेश्वर के वचन का महत्व था। पन्द्रह अलग - अलग अभिव्यज़्तियों ''परमेश्वर की इच्छा'' (1:1); ''हमारे प्रभु की गवाही'' (1:8); ''सुसमाचार'' (1:8, 10); ''खरी बातें'' (1:13); ''थाती'' (1:14); ''मेरे सुसमाचार'' (2:8); ''परमेश्वर का वचन'' (2:9); ''सत्य के वचन'' (2:15); ''सत्य'' (2:18, 25; 3:7, 8; 4:4); ''विश्वास'' (3:8); ''पवित्र शास्त्र'' (3:15); ''पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया'' (3:16); ''वचन'' (4:2); ''खरा उपदेश'' (4:3); ''प्रचार'' (4:17) से, स्वर्ग से मिले महिमामय प्रकाशन के बीस पद दिए गए हैं।

परमेश्वर की सेवा करने वाले सुसमाचार प्रचारक को चाहिए *कि इस पुस्तक के साथ - साथ रहे!* पौलुस के शज़्दों में इस बात को न केवल इन विचारों को इकट्ठा करने के लिए सुनहरी धागे के रूप में बल्कि उन लोगों की जुड़ती सूची से भी दिखाया गया है जो पौलुस से और सत्य से फिर गए थे:

1. फूगिलुस और हिरमुगिनेस (और आसिया वाले सब) पौलुस को छोड़ गए थे (1:15)।

2. हुमिनियुस और फिलेतुस, जिनका वचन ''सड़े घाव की नाईं'' (कैंसर; NKJV) फैलना था, सत्य से भटक गए और न जाने कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर दिया था (2:17, 18; 1 तीमुथियुस 1:20)।

3. कइयों को समझाने की आवश्यकता थी ज़्योंकि वे ''विरोध'' करते थे। उन्हें शैतान ने अपनी ''इच्छा पूरी करने के लिए'' अपने फंदे में फंसा लिया था (2:25, 26)।

4. आज्ञा तोड़ने की इस पूरी सूची के कारण ''कठिन समयों'' के आने के बारे में बताया गया था। लोगों ने ''सीखते तो रहना था पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुंचना था'' बल्कि ''सत्य का विरोध'' ही करना था (3:1-8)।

5. पौलुस ने कहा कि ''दुष्ट, और बहकाने वाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे'' (3:13)।

6. कुछ लोगों ने ''खरी शिक्षा'' को नहीं सहारना था, बल्कि अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक इकट्ठे कर लेने थे और ''कानों की खुजली के कारण ... सत्य से'' फिर जाएंगे (4:3, 4)।

7. देहमास ने ''इस संसार को प्रिय जानकर'' पौलुस को छोड़ दिया था (4:10)।

8. सिकन्दर ठठेरे ने पौलुस के साथ बहुत बुराई की और ''*हमारी बातों* का बहुत ही विरोध किया,'' इसलिए तीमुथियुस के लिए ''सावधान'' रहना आवश्यक था (4:14, 15)।

9. पौलुस ने लिखा कि उसके मुकदमे के समय ''सबने उसे छोड़ दिया था'' (4:16)।

इतने सारे नकारात्मक कथनों, बुराइयों और प्रतिकूल लोगों और पौलुस के आस पास की परिस्थितियों (और आगे आने वाले बुरे दिनों) के कारण, कोई आश्चर्य की बात नहीं

कि पौलुस ने तीमुथियुस से चाहा कि ''खरी बातों को अपना आदर्श'' बनाए और उस ''थाती'' की रखवाली करे जो उसे ''सौंपी'' गई थी (1:13, 14)।

पौलुस की भावुक विदाई

क्रूस के उस बूढ़े वीर सिपाही द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए अन्तिम शब्दों में भावुकता दिखाई देती है। परमेश्वर द्वारा दिए गए ये शब्द हमारे लिए सम्भालकर रखे गए हैं जो उन ''अन्तिम दिनों'' में रहते हैं जब कठिन समय आएगा और बहकाने वाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए और बिगड़ते जाएंगे (3:1, 13)। ये शब्द हमारे लिए की गई हर प्रार्थना, आने वाली हर चुनौती और लिखी गई हर चेतावनी को *भाव विभोर होकर ध्यान लगाकर, सावधानी से पढ़ने* के लिए हमारे लिए एक प्रोत्साहित करने वाले बन जाते हैं। मृत्यु निकट होने पर पौलुस का आत्मविश्वास हमारा बन सकता है, और वह हमें भी हर बुराई से ''छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करने पहुंचाएगा: उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥'' जिसने उसे छुड़ाया वह हमें भी (4:17, 18)। इन शब्दों से इस पत्री का अध्ययन करने का माहौल बन जाता है!

1 तीमुथियुस में पौलुस द्वारा उल्लेखित लोगों तथा स्थानों से हम परिचित हो चुके हैं। तीमुथियुस के नाम दूसरी पत्री का अध्ययन करने से पहले, आइए उन कुछ नामों पर एक नज़र डाल लें जिनका हम अध्ययन करेंगे।।

2 तीमुथियुस में वर्णित लोग

सिकन्दर ठठेरा

''सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की हैं प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा'' (4:14)।

पौलुस ने कहा कि इस आदमी ने उसे बहुत नुक़्सान पहुंचाया था। (शायद उसने उसे अधिकारियों के पास पकड़वाया था, जो पौलुस की अंतिम गिरफ़्तारी बनी।) वह 1 तीमुथियुस 1:20 वाला व्यक्ति हो सकता है, परन्तु उसके काम का उल्लेख शायद दूसरे सिकन्दर के बारे में उलझन पड़ने से दूर रखने के लिए किया गया। पौलुस ने तीमुथियुस को उससे सावधान रहने की चेतावनी दी थी।

प्रिसका (या प्रिसकिल्ला) और अक्विला

''प्रिसका और अक्विला ... को नमस्कार'' (4:19)।

पौलुस ने पुन्तुस से तीमुथियुस के हाथ इन मित्रों को सलाम भेजा। पौलुस ने कुरिन्थुस में अक्विला और उसकी पत्नी प्रिसकिल्ला (तम्बू बनाने वाले) के साथ मिलकर काम किया था, और वे पौलुस के साथ इफिसुस में भी गए थे। उन्हें क्लौदियुस की एक आज्ञा से, अन्य यहूदियों के साथ रोम से निकाल दिया गया था।

करपुस

''जो बागा मैं त्रोआस के करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना'' (4:13)।

करपुस त्रोआस का रहने वाला था जिसके पास पौलुस अपनी दूसरी गिरफ़्तारी के बाद रोम को जाते समय अपनी कुछ चीज़ें छोड़ गया था।

ज़्लौदिया

''यूबूलुस, और पूदेंस और लीनुस और ज़्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार'' (4:21)।

रोम में इस चेली की ओर से पौलुस ने तीमुथियुस के नाम सलाम भेजा। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार ज़्लौदिया बर्तानवी युवती थी जिसके पिता, राजा कोगिदुज़्नुस ने तिबरियुस ज़्लौदियुस का नाम अपनाया था। इसी आयत में वर्णित पूदेंस उसका पति हो सकता है।

क्रेसकेंस

''... क्रेसकेंस गलतिया को चला गया है'' (4:10)।

पौलुस का यह सहकर्मी उसकी मृत्यु से पहले गलतिया को चला गया था।

दाऊद

''यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है'' (2:8)।

राजा दाऊद का उल्लेख यह याद दिलाने के लिए था कि यीशु मसीह ही मसीहा अर्थात पीढ़ियों से की गई यहूदी भविष्यवाणी का पूरा होना है।

देमास

''ज़्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है ...'' (4:10)।

कुलुस्सियों 4:14 और फिलेमोन 24 में वर्णित देमास पौलुस का एक सहकर्मी था। परन्तु ''इस संसार को प्रिय जानकर'' वह पौलुस को रोम में छोड़कर जो कि अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था, थिस्सलुनीके को चला गया था।

इरास्तुस

''इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और त्रुफिमुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है'' (4:20)।

पौलुस का यह सहकर्मी पौलुस द्वारा रोम में अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करने के समय

कुरिन्थुस में था। इरास्तुस को पहले तीमुथियुस का सहयात्री बनाकर मकिदुनिया में भेजा गया था (प्रेरितों 19:22)। शायद यह कुरिन्थुस नगर का वही व्यक्ति है जिसे पौलुस ने परिवर्तित किया था (रोमियों 16:23)। इस नाम को प्राचीन कुरिन्थुस में सड़क के एक भाग के रूप में बनाया गया था जिसे ''इरास्तुस पेवमेंट'' के रूप में जाना जाता था।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस

''जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न कर: यूबूलुस, और पूदेंस और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार'' (4:21)।

इन रोमी चेलों ने पौलुस के माध्यम से तीमुथियुस को सलाम भेजा।

यूनीके

''और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में थी ...'' (1:5)।

तीमुथियुस की माता यूनीके, लुस्त्रा की रहने वाली एक विश्वासी यहूदिन थी (देखिए प्रेरितों 16:1)।

हुमिनयुस और फिलेतुस

''और उन का वचन सड़े-घाव की नाईं फैलता जाएगा: हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं। जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं'' (2:17, 18)।

इन झूठे शिक्षकों की निन्दा की गई (देखिए 1 तीमुथियुस 1:20)। ये लोग यह शिक्षा दे रहे थे कि पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका है।

यन्ब्रेस और यन्नेस

''और जैसे यन्नेस और यन्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं: ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। पर वे इस से आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी'' (3:8, 9)।

फिरौन के दरबार के इन जादूगरों ने मूसा का विरोध किया था (निर्गमन 7:11)। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि ऐसे ही लोग भविष्य में खड़े होंगे जिनके साथ कठोर व्यवहार करने की आवश्यकता होगी।

लोईस

''और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस ...'' (1:5)।

एक यहूदी विश्वासिन लोईस, तीमुथियुस की नानी थी। पौलुस ने विश्वास के एक उदाहरण के रूप में तीमुथियुस के पास उसकी सराहना की।

लूका

''केवल लूका मेरे साथ है ... '' (4:11)।

यह प्रिय वैद्य (कुलुस्सियों 4:14) सुसमाचार के समानान्तर वृज़ांतों में से एक और प्रेरितों के काम का लेखक है। लूका पौलुस के साथ सफ़र में रहा (फिलेमोन 24) और पौलुस द्वारा अपनी मृत्यु से पहले तीमुथियुस को रोम में जल्द आने की बिनती करने के समय केवल लूका ही उसके पास था।

मरकुस

''मरकुस को लेकर चला आ; ज़्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है'' (4:11)।

सुसमाचार की समानान्तर पुस्तकों में से एक का लेखक और बरनबास का भाई, मरकुस अपने चचेरे भाई और पौलुस के साथ पहली मिशनरी यात्रा पर गया था। दूसरी यात्रा के लिए सहयात्री के रूप में पौलुस को वह स्वीकार्य नहीं था ज़्योंकि उसने इस दल के गलातिया में काम आरज़्भ करने की तैयारी के समय पहली यात्रा में उन्हें छोड़ दिया था। परन्तु अपनी मृत्यु का विचार करके पौलुस ने तीमुथियुस से मरकुस को उसके पास लाने के लिए कहा ज़्योंकि वह सेवकाई के लिए उपयोगी था।

मूसा

''और जैसे यन्नेस और यज़्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं: ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकज़्मे हैं'' (3:8)।

पौलुस ने तीमुथियुस के पास मूसा का उल्लेख परमेश्वर के लोगों के एक अगुवे के रूप में किया जिसने फिरौन के दरबार के यन्नेस और यज़्ब्रेस नामक जादूगरों के विरोध और चालाकी का सामना किया था। तीमुथियुस को भी प्रभु के लिए अपने काम में दुष्ट लोगों का सामना करना था।

उनेसिफुरुस

''उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, ज़्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी ज़ंजीरों से लज्जित न हुआ'' (1:16)।

''प्रिसका और अज़िला को, और उनेसिफुरुस के घराने को नमस्कार'' (4:19)।

इफिसुस के रहने वाले इस मसीही ने रोम में पौलुस को ढूंढ़ा और उसका मित्र बना। पौलुस से मित्रता के कारण उनेसिफुरुस को शायद अपनी जान भी गंवानी पड़ी हो, ज़्योंकि

पौलुस ने ''उनेसिफुरुस और उसके घराने'' के बजाय ''उनेसिफुरुस के घराने'' को सलाम भेजते हुए उन पर अनुग्रह के लिए प्रार्थना की।

फूगिलुस और हिरमुगिनेस

''तू जानता है, कि आसिया वाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं'' (1:15)।

प्रेरित पौलुस ने इन झूठे शिक्षकों का उल्लेख एशिया वालों के अपनी शिक्षा से फिर जाने वालों के रूप में किया।

तीतुस

''क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है'' (4:10)।

पौलुस का साथी तीतुस सेवक था। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अपनी हत्या को ध्यान में रखते हुए उसने तीतुस को दलमतिया (इल्लुरिकुम का एक इलाका, जिसे आज अल्बानिया कहा जाता है) में भेज दिया था।

त्रुफिमुस

''... त्रुफिमुस को मैं ने मिलेतुस में बीमार छोड़ा है'' (4:20)।

पौलुस के साथ सेवकाई करने वाला यह आदमी बीमार था और इसे मिलेतुस में छोड़ दिया गया था। यह तथ्य कि पौलुस के पास चंगाई की सामर्थ थी परन्तु उसने इस मित्र को चंगा नहीं किया, एक मजबूत गवाही है कि नये नियम में हुए आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य परमेश्वर के वचन को पक्का करना था। एक बार पक्का हो जाने के बाद, वचन की फिर से पुष्टि करने की आवश्यकता नहीं है (देखिए यूहन्ना 20:30, 31)।

तुखिकुस

''तुखिकुस को मैं ने इफिसुस को भेजा है'' (4:12)।

एशिया माइनर का यह मसीही यूनान से यरूशलेम तक पौलुस के साथ रहा था और पौलुस ने इसे इफिसुस, कुलुस्से, और फिलेमोन में पत्र बांटने के लिए भेजा था। स्पष्टतया, यह वही है जिसने कुलुस्से के लोगों को वचन बताया और जो बाद में कुलुस्से में विधर्म से निपटने के लिए पौलुस की सहायता चाहता था। उसका उल्लेख प्रेरितों 20:4; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7; 2 तीमुथियुस 4:12 और तीतुस 3:12 में है।

2 तीमुथियुस में स्थानों का वर्णन

अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा

''और ऐसे दुखों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे और

और दुखों में भी, जो मैं ने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया'' (3:11)।

पहली मिशनरी यात्रा में पौलुस और बरनबास ने इन नगरों में प्रचार किया था। पिसिदिया का अन्ताकिया इकुनियुम और लुस्त्रा से अधिक दूर नहीं था जो लुकाउनिया (वर्तमान तुर्की का एक इलाका) में स्थित थे।

आसिया

''तू जानता है, कि आसिया वाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं'' (1:15)।

इफिसुस इस रोमी इलाके में था। पौलुस ने कहा कि आसिया के सब लोग उससे मुकर गए थे।

कुरिन्थुस

''इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, ... '' (4:20)।

कुरिन्थुस अखया का एक नगर था। पौलुस ने अपनी मृत्यु को ध्यान में रखते हुए इरास्तुस को वहीं छोड़ दिया था।

दलमतिया

''... क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है'' (4:10)।

पौलुस ने तीतुस को रोमी शासन के हाथों अपनी सज़्भावित मृत्यु को ध्यान में रखते हुए काम को जारी रखने के लिए, इलिरिकुम के इलाके दलमतिया में भेज दिया था।

गलतिया

''... क्रेसकेंस गलतिया को ... चला गया है'' (4:10)।

पौलुस ने क्रेसकेंस को एशिया माइनर के केन्द्रीय इलाके गलातिया में कलीसियाओं के साथ काम करने के लिए भेज दिया जहां उसने पौलुस की होने वाली मृत्यु को ध्यान में रखते हुए काम जारी रखना था।

मिलेतुस

''... त्रुफिमुस को मैंने मिलेतुस में बीमार छोड़ा है'' (4:20)।

रोम की अपनी अन्तिम यात्रा को जारी रखते हुए पौलुस ने एशिया माइनर के इस नगर में अपने बीमार साथी त्रुफिमुस को छोड़ दिया।

थिस्सलुनीके

''ज़्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है ... '' (4:10)।

देमास पौलुस को छोड़कर मकिदुनिया के इस नगर में चला गया।

त्रोआस

''जो बागा मैं त्रोआस के करपुस के यहां छोड़ आया हूं, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना'' (4:13)।

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसने एशिया के इस बन्दरगाह नगर में अपना चोगा, किताबें और चर्मपत्र छोड़े थे। उसने तीमुथियुस को रोम में जल्द आने और काम के लिए मरकुस को साथ लाने के समय इन चीज़ों को भी लाने के लिए कहा था (4:11-13)।

यह कब लिखी गई थी?

इस पत्री के लिखे जाने का समय सुनिश्चित नहीं है,[2] परन्तु रोनल्ड वार्ड ने ''सज़्भावनाओं'' को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है:

> ... 2 तीमुथियुस को प्रेरित पौलुस द्वारा अपनी मृत्यु के कुछ सप्ताह या महीने पहले (4:6), रोम से लिखा गया था (1:17; 4:20-21)। यह पत्री ग्रीष्मकाल के अन्त या पतझड़ के आरज़्भ में लिखी गई होनी चाहिए, परन्तु वास्तविक वर्ष पौलुस के कालक्रम के विवादित प्रश्नों के उज़र की खोज, विशेषकर उसके अन्तिम कुछ वर्षों पर निर्भर है। इस पत्री के लिखने की तिथियां 64 और 68 ईस्वी के बीच बताई जाती हैं। एक थ्यौरी इस विचार से जुड़ी है कि पौलुस को उस आतंकी शासन में मारा गया था जो कि रोम की उस बड़ी आग के बाद हुआ था, जब नीरो बलि के बकरों को ढूंढ़ रहा था जो कि मसीही लोगों को ''बनाया गया'' था। इसमें इस पत्री के संकलन के समय के रूप में 64 ईस्वी का संकेत है जब आग लगी थी (तु. I ज़्लेमेंट 5:7; 6:1)। दूसरे लोग उसकी मृत्यु की तिथि नीरो के शासन के अन्तिम वर्ष, 68 ईस्वी तक ले जाते हैं। इस अनिश्चितता का खेद है, लेकिन इसे मानना ही होगा। इससे इस पत्री का महत्व कम नहीं हो सकता, जिसमें तीमुथियुस और हमारे नाम इस प्रेरित के भावुकतापूर्ण अन्तिम शज़्द हैं।[3]
>
> – डेयटन कीसी

पाद टिप्पणियां

[1]जनरल डगलस मैकार्थर, ''जनरल मैकार्थर'स मैसेज टू कांग्रेस'' (विचिता, कैन.: डिफेन्डर्स, 1951), 6. [2]इस पुस्तक के आरज़्भ में परिचय पर टिप्पणियां देखिए। [3]रोनल्ड ए. वार्ड, *कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वैको, टैज़्ससः वर्ड बुकस, 1974), 131.